श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-नई दिल्ली (स्थापित सन् 1906)
का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

सन् 1913 से निरंतर प्रकाशित होने वाला स्थानकवासी जैन परंपरा का प्राचीनतम् गौरवशाली समाचार पत्र

जैन प्रकाश सम्पादकीय कार्यालय
जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-01
Tel.: 011-23363729, 23365420 Mob.: 9019731906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : https://jainconference.org

सम्पादक : डॉ. अमित जैन, बड़ौत
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com


श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.


श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.


श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.


श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

अक्टूबर - तृतीय, अंक - 31 विक्रम संवत् - 2083 वीर संवत् - 2552 ईस्वी सन् - 2026

Address
Here

शिव संदेश

सरलता है परम पात्रता

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.



पहाड़ों पर वर्षा होती है। पर पहाड़ उस वर्षा-जल को ग्रहण नहीं कर पाते हैं। पहाड़ों पर बरसा हुआ जल झीलों और नदियों में चला जाता है। वर्षा पहाड़ों पर होती है और झीलें भर जाती हैं। पहाड़ खाली रह जाते हैं। ऐसा क्यों होता है? इसका स्पष्ट कारण है कि पहाड़ पहले से ही भरे हुए हैं। वे अकड़कर आकाश में खड़े हैं। चारों ओर से वे ठोस हैं। उनमें ग्रहण करने को कहीं रिक्तता नहीं है। सब ओर से वे भरे हैं। झीलें और नदियां खाली होती हैं, गहरी होती हैं। इसलिए पहाड़ों पर बरसा हुआ जल उनमें आ जाता है। झीलें और नदियां समृद्ध-सलीला बन जाती हैं।

यह एक तथ्य है। सीधा-साफ गणित है। खाली को ही भरा जा सकता है। भरे को भरने का कोई उपाय नहीं है। पहाड़ भरे हैं, इसलिए उन पर कितनी ही वर्षा होती रहे, महीनों मेघ बरसते रहें पर उन पर जल नहीं ठहरता है। नदियां और झीलें खाली होती हैं, गहरी होती हैं इसलिए वे भर जाती हैं।

ऐसे ही जिस व्यक्ति का हृदय खाली है उसी में कुछ उंडेला जा सकता है। जिसका हृदय पहले से ही भरा हुआ है उसमें कुछ उंडेला नहीं जा सकता है। हृदय खाली है, शुद्ध है, पवित्र है तो उसमें धर्म ठहर सकता है, परमात्मा प्रतिबिम्बित हो सकता है।

खाली हृदय पात्रता है। भरा हुआ हृदय अपात्रता है। भरे हृदय के साथ आप सागर के किनारे भी चले जाएं, महावीर के समवसरण में भी चले जाएं वहां से भी आप कुछ ग्रहण नहीं कर पाएंगे। क्योंकि आप पहले से ही भरे हैं। कुछ ग्रहण करने के लिए पात्रता परम अपेक्षित है। खाली और शुद्ध होना प्रथम शर्त है।

ईसा से प्रश्न पूछा गया, परमात्मा के राज्य में किसे प्रवेश मिलता है? उन्होंने एक बालक को अपने कंधे पर उठा लिया और कहा-एक बालक को परमात्मा के राज्य में प्रवेश मिलता है।

ईसा के कहने का इतना ही अर्थ है कि जो बालक की तरह हो जाए वही परमात्मा के राज्य में प्रवेश का अधिकारी होता है। बालक का हृदय खाली होता है, सरल, शुद्ध और प्रांजल होता है। उसे जो कहा जाता है उसे वह यथावत ग्रहण कर लेता है। अपनी ओर से वह कुछ मिलाता नहीं है। क्योंकि अपनी ओर से मिलाने के लिए उसके पास कुछ भी नहीं होता है। वह तो निपट और कोरा होता है।



अध्यक्षीय

अमृत महोत्सव वर्ष के पावन प्रसंग पर...

विजयदशमी का महापर्व एवं श्रमण साधना के 49 गौरवशाली वर्ष

- अतुल जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष E-mail : ajvk1973@gmail.com

भारतीय संस्कृति में विजयदशमी केवल एक उत्सव नहीं, अपितु सत्य की विजय, सदाचार की प्रतिष्ठा और आत्मबल के जागरण का महान पर्व है। यह पावन पर्व युगों-युगों से हमें यही संदेश देता आया है कि असत्य और अधर्म चाहे कितने भी बलशाली प्रतीत हों, अंततः विजय केवल सत्य, नीति और धर्म की ही होती है। जैन श्रमण परम्परा हमें यह शाश्वत प्रेरणा देती है कि जीवन की वास्तविक और अमर विजय किसी बाह्य संघर्षों या भौतिक सफलताओं में नहीं, अपितु स्वयं के भीतर विद्यमान क्रोध, मान, माया और लोभ जैसी कषायों पर विजय प्राप्त करने में निहित है। जब मनुष्य अपने भीतर की बुराइयों का दहन करता है, तभी उसकी आत्मा निर्मल और पवित्र बनती है।

इस पावन अवसर पर 'उपाध्याय प्रवर पूज्य गुरुदेव श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज साहब का 49वाँ दीक्षा दिवस' हम सभी के लिए परम श्रद्धा, असीम गौरव एवं आध्यात्मिक प्रेरणा का विशिष्ट प्रसंग है। पूज्य गुरुदेव का संपूर्ण जीवन संयम, वात्सल्य और करुणा का एक जीवंत उदाहरण है, जो निरंतर समाज को आध्यात्मिक आलोक की ओर अग्रसर कर रहा है। गुरुदेव का साधनामय जीवन त्याग, तप, संयम, स्वाध्याय और जिनशासन के प्रति अनन्य समर्पण की प्रेरक गाथा है। लगभग आधी शताब्दी का उनका यह दीर्घ साधना-पथ का स्मरण हमें आत्मकल्याण के साथ-साथ समाज की निस्वार्थ सेवा, संघ की सुदृढ़ता और धर्म की प्रभावना के लिए सदैव समर्पित रहने का मार्ग दिखाता है।

'श्रमण संघ स्थापना अमृत महोत्सव वर्ष' हमारी गौरवशाली आध्यात्मिक विरासत, गुरु भगवंतों के उपकारों और महान संतों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अत्यंत पावन अवसर है। पूज्य गुरु भगवंतों के तप बल, सुदृढ़ चिंतन और दूरदर्शिता के कारण ही आज श्रमण संघ एकता के वटवृक्ष के रूप में प्रतिस्थापित है। 75 वर्षों की यह यात्रा पूज्य संतों की अमूल्य तपस्या, त्याग और धर्मप्रभावना के साथ संघीय एकता एवं समन्वय की सुदृढ़ परम्परा का प्रतीक है। यह पावन वर्ष हमें अपने जैन सिद्धांतों के प्रति निष्ठावान रहते हुए श्रमण संस्कृति के महान आदर्शों, मूल्यों और संस्कारों को नई पीढ़ी तक प्रभावी रूप से पहुँचाने का पावन संदेश देता है।

इस पावन और ऐतिहासिक अवसर पर श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली के समस्त राष्ट्रव्यापी परिवार को विजयादशमी की हार्दिक मंगलकामनाएँ।

सम्पादकीय

साधु-साध्वियों का पदविहार सुरक्षित हो, परंपरा अक्षुण्ण रहे

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर संघचालक श्री मोहन भागवत जी की पहल से जगी नई आशा

- डॉ. अमितराय जैन - राष्ट्रीय महामंत्री



जैन श्रमण परंपरा के संरक्षण और साधु-साध्वियों की सुरक्षा के प्रश्न पर मुंबई के बोरीवली में 2 अक्टूबर 2026 को आयोजित ऑल इंडिया विहार सेवा ग्रुप के 14वें अधिवेशन से एक सकारात्मक संदेश सामने आया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर संघचालक डॉ. मोहनराव भागवत जी की उपस्थिति में आयोजित इस सम्मेलन में पद्म भूषण से सम्मानित आचार्य भगवंत पूज्य श्री विजय रत्नसुंदरसूरिश्वर जी महाराज सहित अनेक संत उपस्थित थे। पाञ्चजन्य और लोकसत्ता ने इस आयोजन की रिपोर्ट प्रकाशित की है।

इस अवसर पर जैन साधु-साध्वियों की ज्ञानपरंपरा, सुरक्षा और सामाजिक सहयोग को लेकर व्यक्त विचारों ने नई आशा जगाई है। संघ के स्वयं सेवकों के सहयोग से देशभर में पदविहार करने वाले साधु-साध्वियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की भावना स्वागतयोग्य है। यदि इसे एक व्यवस्थित राष्ट्रव्यापी अभियान का स्वरूप दिया जाता है, तो यह जैन समाज की एक गंभीर समस्या के समाधान की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम सिद्ध हो सकता है।

पदविहार जैन श्रमण जीवन की आत्मा है। हजारों वर्षों से जैन साधु-साध्वियाँ त्याग, तप, अपरिग्रह और संयम की साधना करते हुए पैदल विहार करते आए हैं। लेकिन आज तेज रफ्तार वाहनों, असावधान ड्राइविंग और असुरक्षित सड़कों ने इस परंपरा के सामने नई चुनौती खड़ी कर दी है। पिछले वर्षों में पदयात्रा के दौरान सड़क दुर्घटनाओं में साधु-साध्वियों के देवलोक गमन और गंभीर रूप से घायल होने की घटनाएँ सामने आती रही हैं। गुजरात में वर्ष 2022 में ही साधु-साध्वियों की सुरक्षा के लिए पुलिस व्यवस्था किए जाने संबंधी निर्देश जारी हुए थे। टाइम्स ऑफ इंडिया ने 15 जून 2022 को इस संबंध में समाचार प्रकाशित किया था।

इन घटनाओं ने स्वाभाविक रूप से जैन साधु-साध्वियों के मन में सुरक्षा को लेकर चिंता और भविष्य के प्रति असमंजस बढ़ाया है। जब परंपरागत पदविहार ही जीवन के लिए जोखिमपूर्ण हो जाए, तब कुछ लोगों अथवा त्यागी वर्ग के मन में वैकल्पिक व्यवस्थाओं जैसे मोटर चालित व्हीलचेयर अथवा वाहन-विहार की ओर झुकाव उत्पन्न होना भी इसी व्यापक संकट की ओर संकेत करता है। हालाँकि, ऐसी प्रवृत्तियों को पूरी श्रमण परंपरा पर लागू करना उचित नहीं, लेकिन उनके पीछे छिपी असुरक्षा की भावना की अनदेखी भी नहीं की जा सकती। (शेष पृष्ठ 5 में)



J. P. Jain Foundation

(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)

सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन


चेयरमैन अभय जैन | महामंत्री अतुल जैन | कोषाध्यक्ष अमित जैन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद
युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.
आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.
उपाध्याय मण्डल
परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'
प्रवर्तक मण्डल
परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री कोमलमुनि जी म.सा.
मंत्री मण्डल
परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)
सलाहकार मण्डल
परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'
प्रवर्तिनी मण्डल
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष :	श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री :	प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष :	श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष :	श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष :	श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल
चेयरमैन : श्री विजय जैन - पानीपत
वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन - मुंबई
समन्वयक : श्री जसवंत जैन - दिल्ली
सदस्यगण : डॉ. अमित राय जैन - बड़ौत, डॉ. अनामिका तलेसरा जैन - सूरत, श्री आनंदमल छल्लानी जैन - चेन्नई, श्री अंकुर जैन - दिल्ली, श्री अशोक रांका जैन - बेंगलुरु, श्री अतुल जैन - दिल्ली, श्री अविनाश चोरड़िया जैन - नई दिल्ली, श्री जे. डी. जैन - गाजियाबाद, श्री जयंती कुकड़ा जैन - सूरत, श्री कांति कुमार लोढ़ा जैन - औरंगाबाद, श्री कंवरलाल सूर्या जैन - भीलवाड़ा, श्री महावीर रांका जैन - चेन्नई, श्री नरेश आनंद प्रकाश जैन - दिल्ली, श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन - पाली, श्री पारस मोदी जैन - मुंबई, श्री प्रशांत जैन - दिल्ली, श्री रमेश भंडारी जैन - इंदौर, श्री रविन्द्रनाथ जैन - दिल्ली, श्री संजीव हीरालाल जैन - लुधियाना, श्रीमती संतोष जैन - दिल्ली, श्री शशिकांत पिंटू कर्नावट जैन - मालेगांव, श्री सुदर्शन जैन - दिल्ली, श्री विलास राठौर जैन - पुणे, श्री विनय जैन - पानीपत, श्री विनोद कीमती - हैदराबाद, श्री विपुल जैन - दिल्ली

भक्ति शक्ति विद्यादायिनी विजयादशमी

- युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा.



चातुर्मास काल अनेक धार्मिक गतिविधियों से सुसज्जित होता है। वह वैदिक परम्परा हो, जैन परम्परा हो सहजरूपेण,, सांस्कृतिक विरासत के रूप में, पौराणिक कथाओं के आधार से अनेकों विशिष्ट धार्मिक आयोजन भी आषाढ़ मास में कार्तिक मास के चातुर्मासिक अन्तराल में सम्पन्न होते हैं। इसी भारतीय पचांग के आधार पर प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला चातुर्मासिक पर्व धार्मिक वर्ग में अपना विशिष्ट तथा महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। चातुर्मास में सम्पन्न होने वाले पर्वों में से एक महत्त्वपूर्ण दिन है आसोज (आश्विन) शुक्ला दशमी। जिसे सम्पूर्ण भारत वर्ष दशहरा (विजया दशमी) के रूप में मानता है, जानता है।

विजयादशमी (दशहरे) का दिन अनेका प्रेरणाओं को प्रदान करने वाला है। भक्ति, शक्ति विद्या तथा अध्यात्म की शिक्षाएं इसमें समाहित है। दशमी तिथि नवरात्रि के साथ संलग्न हैं। नवरात्रि भक्ति, साधना के लिए सुपरिचित है। मातृशक्ति का सम्मान, उसकी पूजा, उस शक्ति की अनुभूति का उत्सव नवरात्रि को माना जाता है। सदियों से ही नहीं ईसा पूर्व समय से मानव जाति शक्ति की उपासना करता रहा है। इसमें भक्ति, समर्पण, त्याग विशेष प्राबल्य से दिखाई देता है। अनेकों श्रद्धालु नंगे पाँव चलना सैंकड़ों किलोमीटर की दुर्गम यात्रा करना आदि अनेक कार्य भक्ति के बल पर सहजता से कर लेते हैं।

यद्यपि उपासना का कई स्थानों पर पशुबली, स्वच्छंदवृत्ति, मैली विद्याओं के साधना आदि से विकृत रूप भी आ गया है, तथापि यह पर्व मातृशक्ति के उपासना, आराधना, सम्मान का है। इस तथ्य को भी ध्यान में रखना होगा। इन दिनों गरबा आदि के पारम्परिक नाम देकर जिस प्रकार की असामाजिक असांस्कृतिक प्रवृत्ति पनप रही है, बढ़ रही है वह निश्चित रूप से सभी प्रबुद्ध वर्ग के लिए एक चुनौती है। भक्ति के इस नवरात्रि तथा दशमी को यदि भारतीय जन मानस शुद्ध पारंपरिक रूप से समझने, अपनाने का प्रयास करेगा तो यह उत्सव समाज राष्ट्र के लिए वरदान रूप सिद्ध होगा।

विजयादशमी शब्द शक्ति का द्योतक है। पारंपरिक रूप से यह शस्त्रपूजन के रूप में मनाया जाता है। वर्ण व्यवस्था के दौर में इसे क्षत्रिय पर्व भी कहा जाता रहा। प्राचीन कथानुसार यह दिन, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी तथा उनके सहयोगियों द्वारा प्राप्त विजय का दिन है। लंकाधीश महान शक्तिशाली रावण का पराभव संहार का दिन विजयादशमी या दशहरा के नाम से आज भी लोकप्रसिद्ध हैं। यह शक्ति के दुरुपयोग, सदुपयोग का फर्क बताने वाला सबसे मुख्य उदाहरण एवं दिन है।

रावण का वैभव अतुलनीय था। उसका पराक्रम अद्भुत था। साधना भी उसकी अप्रतिम थी। वैभव के रूप में सम्पूर्ण लंका स्वर्णमंडित थी। पराक्रम के कारण अनेकों बलशाली योद्धा उसके दास अनुयायी, सहयोगी थे। साधना भी ऐसी कि वैदिक, पौराणिक कथा के अनुसार सभी ग्रह आदि अनेक दैवी शक्तियाँ अपने अधीन कर ली थी। वैभव शक्ति, साधना के कारण रावण अपराजेय था। रावण की इस क्षमता, योग्यता के होने पर भी उसे दो तत्वों ने परास्त कर दिया या यो कह दो तत्वों के कारण पराजय झेलनी पड़ी। पहला था परस्त्री का आकर्षण। रामचन्द्र जी की पत्नी सीता के बारे में सुनकर वह अपने आपको रोक न पाया। अनेकों प्रकार से समझाने पर भी अपनी जिद को नहीं छोड़ा। उसके पीछे अपने भाई को भी दुश्मन बना लिया। अपने प्रिय स्वजनों के बात को भी ठुकरा दिया। प्रत्येक बात को दूरदृष्टि से सोच समझकर करने वाला यह बुद्धिमान रावण भी सीता के लिए अपना विवेक खो बैठा। (शेष पृष्ठ 5 में)

पूज्य उपाध्याय श्री रवीन्द्र मुनि जी म. की दीक्षा जयंती पर विशेष...

संयम साधना के 49 वर्ष ज्ञान, त्याग और लोक मंगल की अविराम यात्रा

- पू. श्री अर्हम मुनि जी म.



जैन श्रमण परंपरा में दीक्षा आत्मकल्याण, संयम और त्याग की साधना का महत्त्वपूर्ण सोपान है। दीक्षा के 49 वर्ष पूर्ण होना केवल दीर्घ साधना का स्मरण नहीं, बल्कि उन आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर है, जो साधु जीवन को समाज के लिए प्रेरणास्रोत बनाते हैं। परम पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज साहब की 49वीं दीक्षा जयंती इसी दृष्टि से विशिष्ट महत्त्व रखती है।

गुरुदेव के व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण पक्ष जैन आगम, तत्त्वज्ञान और सिद्धांतशास्त्र के अध्ययन के प्रति अनुराग है। उपाध्याय पद ज्ञानाराधना, अध्यापन और आध्यात्मिक मार्गदर्शन की उत्तरदायी परंपरा का प्रतीक है। गुरुदेव का धार्मिक अध्ययन इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि जैन धर्म की प्रभावना के लिए शास्त्रीय ज्ञान के साथ उसकी जीवनोपयोगी व्याख्या भी आवश्यक है। आगम के सिद्धांत जब आत्मचिंतन, सदाचार और विवेकपूर्ण व्यवहार का आधार बनते हैं, तभी वे समाज के लिए कल्याणकारी सिद्ध होते हैं।

गुरुदेव का दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, जम्मू, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, तेलंगाना, कर्नाटक और तमिलनाडु सहित विभिन्न क्षेत्रों में धर्म विचरण रहा है। यह व्यापक धर्म विचरण जैन सिद्धांतों को विभिन्न क्षेत्रों के श्रावक-श्राविकाओं तक पहुँचाने तथा धार्मिक चेतना के संवर्धन के महत्त्व को रेखांकित करता है। धर्म विचरण का वास्तविक उद्देश्य केवल धार्मिक आयोजन करना नहीं, बल्कि लोगों को आत्मनिरीक्षण, नैतिकता और संयम की ओर प्रेरित करना है।

गुरुदेव के द्वारा तीर्थ गंगा, आगम मंथन, सद्भावनाओं का शिलान्यास, निग्रन्थ प्रवचन, मेरी अजमेर मुनि सम्मेलन यात्रा तथा महावीर का अन्तस्तल जैसी साहित्यिक कृतियों का लेखन-सम्पादन किया गया है।

धार्मिक लेखन और संपादन की सार्थकता इसी में है कि आगम एवं दर्शन से संबंधित विषयों पर विचार करने की प्रेरणा मिले, आध्यात्मिक जिज्ञासाओं का समाधान हो और पाठकों में धर्म के प्रति समझ विकसित हो। इस प्रकार साहित्य साधना और समाज के बीच एक महत्त्वपूर्ण सेतु बन सकता है। गुरुदेव की 49वीं दीक्षा जयंती का पावन प्रसंग हमें यह सिखाता है कि गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धा उनके आदर्शों को जीवन में उतारने से प्रकट होती है। इसलिए यह अवसर केवल अभिनंदन तक सीमित न रहकर आत्ममंथन का संकल्प बने, हमारी वाणी में मधुरता हो, व्यवहार में करुणा हो, विचारों में उदारता हो और जीवन में अनावश्यक संग्रह से बचने की भावना विकसित हो।

परम पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज साहब का आगम-अनुराग, धर्मविचरण और धार्मिक साहित्य से जुड़ा कार्य उनके आध्यात्मिक परिचय के उल्लेखनीय आयाम हैं। ये आयाम जैन श्रमण संस्कृति के संरक्षण, अध्ययन और प्रसार के महत्त्व को सामने लाते हैं।

इस पावन अवसर पर हमारी मंगलकामना है कि गुरुदेव की ज्ञानाराधना और धर्मप्रभावना निरंतर आगे बढ़ती रहे। उनके सान्निध्य से समाज में सदाचार, सद्भाव, आत्मचिंतन और आध्यात्मिक जागरूकता का विकास हो तथा नई पीढ़ी जैन दर्शन के शाश्वत मूल्यों को समझकर उन्हें अपने जीवन में अपनाए। गुरुदेव की दीक्षा जयंती का सर्वोत्तम अभिनंदन यही है कि हम उनके जीवन से प्रेरणा लेकर ज्ञान को आचरण, श्रद्धा को साधना और धर्म को लोकमंगल का माध्यम बनाएँ।



श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

सादड़ी से हीरक जयंती तक : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ

फिर से इतिहास का गवाह बनेगा सादड़ी : श्रमण संघ का भव्य अमृत महोत्सव (10 मार्च 2027)

- डॉ. वरुण मुनि (डी. लिट) गुरु अमृत शिष्य, पाली राजस्थान



इतिहास की छाती पर कुछ वर्ष केवल बीतते नहीं, अपितु एक अमिट और स्वर्णिम हस्ताक्षर बन जाते हैं। सादड़ी (राजस्थान) की पावन और ऐतिहासिक धरा पर 'समन्वय और संगठन' की जो बीज-गाथा बोई गई थी, वह आज 75 वर्षों के असीम तप, त्याग और समर्पण के बाद एक विशाल, छायादार और फलदायी वटवृक्ष का रूप धारण कर चुकी है। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ का यह 75वाँ वर्ष केवल एक समय-चक्र की पूर्णता नहीं है, बल्कि यह गौरव, स्वाभिमान, और जिन-शासन की प्रभावना का देदीप्यमान 'अमृत महोत्सव' (Diamond Jubilee) है।

सादड़ी का वह महासंकल्प और त्याग की नींव : आज से 75 वर्ष पूर्व, सादड़ी की ऐतिहासिक भूमि पर भारतीय जैन इतिहास का एक नव-प्रभात हुआ था। जहाँ मतभेदों के कुहरे को छाँटकर, संगठन और समन्वय का एक ऐसा अनुपम मार्ग प्रशस्त किया गया, जिसने स्थानकवासी जैन परंपरा को एक सुदृढ़ और अखंड सूत्र में पिरो दिया। यह केवल मुनिवृंदों का एक संघ नहीं बना, बल्कि यह त्याग, संयम और अनुशासन का एक भव्य प्रासाद निर्मित हुआ।

75 वर्ष पूर्व से लेकर अब तक इस संघ की जड़ों में कभी पद-लिप्सा या अहम् की भावना नहीं रही, इसे तो पूज्य महापुरुषों ने अपने स्वेद, अनवरत साधना और निस्वार्थ त्याग से सींचा है। इस भव्य महल का प्रत्येक स्तंभ उन कालजयी, यशोजयी मुनिवृंदों और साध्वीवृंदों की अप्रतिम साधना की गाथा गाता है, जिन्होंने जिन-शासन की पताका को पूरे भारतवर्ष में सदैव उच्चाई प्रदान की।

चार आचार्यों का यशस्वी नेतृत्व एवं दिव्य संत-परंपरा : इस 75 वर्षों के गौरवशाली सफर में श्रमण संघ को चार-चार महान आचार्यों का दूरदर्शी, तेजस्वी और ओजस्वी नेतृत्व प्राप्त हुआ। इन युगपुरुषों के मार्गदर्शन में संघ ने वैचारिक क्रांति, शोध, तत्त्वचिंतन और धर्म-प्रभावना के नए कीर्तिमान स्थापित किए।

इस संघ के गगन में अनेक विद्वान, तपस्वी, शोधक, तत्त्वज्ञ, और प्रखर वक्ता मुनियों तथा साध्वियों के रूप में ऐसे-ऐसे नक्षत्र चमके, जिनकी वाणी से सत्य और अहिंसा का संदेश भारत के कोने-कोने तक पहुँचा। इस संघ की छत्रछाया में दीक्षित होकर सहस्रों श्रमण-श्रमणीवृंदों ने अपने साध्वाचार को सफल किया और आत्म-कल्याण के साथ-साथ समाज-कल्याण की अविरल धारा बहाई।

परदाद गुरु श्रमण सूर्य मरुधर केसरी का पुण्य स्मरण : इस हीरक अमृत वर्ष का साक्षी बनना मेरे जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य और परम गौरव है। यह क्षण मेरे लिए केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि एक असीम भावुकता और आध्यात्मिक स्फुरण का पल है। जिस वटवृक्ष की शीतल छाया में आज संपूर्ण संघ विश्राम कर रहा है, उस बीज को रोपने वालों में मेरे परदाद गुरु, श्रमण-सूर्य, दिव्य विभूति, और श्रमण संघ के भीष्म पितामह, प्रवर्तक पूज्य गुरुदेव 'मरुधर केसरी' श्री मिश्रीमल जी महाराज सा. का नाम इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

उन्होंने इस संघ के अभ्युदय और संगठन की अखंडता के लिए अपना संपूर्ण जीवन न्योछावर कर दिया। आज उन्हीं का प्रपौत्र शिष्य बनकर जब मैं इस विशाल संघ-रूप वटवृक्ष को निहारता हूँ, तो हृदय अहोभाव से भर उठता है। निश्चित ही आज वे और उनके साथ संघ-निर्माण में योगदान देने वाली सभी दिव्य आत्माएँ देवलोक के भव्य आलयों से इस हीरक वर्ष के साक्षी बनकर संपूर्ण संघ पर अपने आशीर्वाद की वर्षा कर रही होंगी और जय-जयकार गा रही होंगी।

श्रावक-श्राविकाओं की अटूट आस्था का अर्घ्य : संघ केवल संतों के त्याग से ही नहीं, बल्कि श्रावक और श्राविकाओं की निश्चल आस्था से भी जीवित रहता है। इन 75 वर्षों में श्रमण संघ के प्रति अनन्य प्रीति, समर्पण और अपार आस्था रखने वाले लाखों श्रावक-श्राविकाओं ने अपनी भक्ति और सेवा रूपी अर्घ्य अर्पण करके इस संघ के संवर्धन में अपनी महती भूमिका निभाई है। संत और श्रावक-इन दोनों पहियों ने मिलकर श्रमण संघ के इस रथ को अनवरत प्रगति के पथ पर अग्रसर रखा है।

सादड़ी संघ और जैन कॉन्फ्रेंस का अतुलनीय साथ : श्रमण संघ के निर्माण के उस ऐतिहासिक दौर में जहाँ साधु संघ और सादड़ी संघ पूरी कटिबद्धता के साथ डटे हुए थे, वहीं 'श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस' का जो अप्रतिम साथ और सहयोग मिला, उसे इतिहास के पन्नों में कभी भुलाया नहीं जा सकता। संघ और जैन कॉन्फ्रेंस का यह अनूठा संगम जिन-शासन की एकता का एक अनुपम उदाहरण बना।

समय बदल गया, लेकिन यह ऐतिहासिक आत्मीयता आज भी वैसी ही अटूट है। इस बार भी श्रमण संघ का यह भव्य एवं ऐतिहासिक अमृत महोत्सव दिनांक 10 मार्च 2027 को पुनः उसी पवित्र सादड़ी धरा पर आयोजित होने जा रहा है। इस ऐतिहासिक क्षण में भी संघ और जैन कॉन्फ्रेंस पुनः एक-दूसरे का संबल बनकर पूरी तत्परता से कार्यरत हैं।

नव संकल्प - आगामी शताब्दियों का स्वर्णिम पथ : हीरक महोत्सव का यह ऐतिहासिक अवसर केवल अतीत की गाथाओं के स्मरण का नहीं है, अपितु भविष्य के नए संकल्पों का शंखनाद है। आज इस पावन मोड़ पर पूरा श्रमण संघ एकजुट होकर यह दृढ़ संकल्प लेता है कि आने वाली शताब्दियों तक इस संघ की गरिमा, आचार-विशुद्धि, और संगठन की शक्ति को और अधिक ऊँचाइयों तक पहुँचाया जाएगा। इस ऐतिहासिक और अलौकिक पल का साक्षी बनने के लिए आप सभी धर्मप्रेमी बंधु 10 मार्च 2027 को सादड़ी (राजस्थान) की पावन धरा पर आयोजित इस अमृत महोत्सव में अवश्य पधारें और संघ-भक्ति का पुण्य लाभ अर्जित करें।

आइए, हम सब मिलकर इस हीरक वर्ष में जिन-शासन की जयजयकार करें, अपने पूर्ववर्ती महापुरुषों के त्याग को नमन करें और श्रमण संघ की अखंडता और गौरव को अनंत काल तक अक्षुण्ण रखने का महासंकल्प लें, जय श्रमण संघ !

अमृत महोत्सव के अंतर्गत साधु-साध्वी जी के डेटा डिजिटलाइजेशन का महा-अभियान

जैन श्रमण संस्कृति और श्रमण संघ के इतिहास में एक नया और क्रांतिकारी अध्याय जुड़ने जा रहा है। श्रमण संघीय अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर, श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली द्वारा एक बहुत ही महत्वपूर्ण और युग-प्रवर्तक कार्य प्रारंभ किया जा रहा है। श्रमण संघ के सभी पूज्य साधु और साध्वी जी के डेटा डिजिटलाइजेशन का कार्य। यह अभियान न केवल संघ की व्यवस्था को आधुनिक और डिजिटल बनाएगा, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और केंद्रित (Centralized) डेटाबेस भी तैयार करेगा।

क्यों है यह डिजिटलाइजेशन महा-अभियान इतना महत्वपूर्ण? : आज का युग डिजिटल युग है और धर्मों के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ संघ की व्यवस्थाओं को भी डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लाना समय की मांग है। इस डेटा डिजिटलाइजेशन के तहत एक सेंट्रल डेटा पोर्टल बनाया जाएगा, जिससे संघ के सभी संत-साध्वी जी की अपडेटेड जानकारी एक ही स्थान पर सुरक्षित रहेगी।

साधु-साध्वी जी का संपूर्ण सेंट्रलाइज्ड डेटा : इसके माध्यम से सभी साधु-साध्वी जी का एक व्यवस्थित केंद्रीय डेटा तैयार होगा।

डिजिटल उपस्थिति और संपर्क : आधुनिक तकनीक को अपनाते हुए सोशल मीडिया हैंडल्स, यूट्यूब चैनल्स और ऑफिशियल वेबसाइट्स को भी इसमें जोड़ा गया है ताकि देश-दुनिया के आम श्रावक-श्राविकाओं तक संतों का संदेश आसानी से पहुंच सके।

साहित्य और इतिहास का संरक्षण : पूज्य संतों द्वारा लिखित या संपादित साहित्य, उनके विचरण क्षेत्र, तप आराधना और चातुर्मास का इतिहास हमेशा-हमेशा के लिए सुरक्षित हो सकेगा।

डिजिटल फॉर्म में क्या-क्या जानकारी शामिल होगी? : इस डेटा डिजिटलाइजेशन के लिए एक विस्तृत संक्षिप्त विवरण फॉर्म (Brief Introduction Form) तैयार किया गया है, जिसमें निम्नलिखित मुख्य बिंदुओं को शामिल किया गया है:-

1. सांसारिक एवं व्यक्तिगत परिचय : पूर्ण नाम, सांसारिक नाम, जन्म स्थान (गाँव, तहसील, जिला, राज्य), माता-पिता और भाई-बहनों के नाम, तथा पारिवारिक पता और मोबाइल/ई-मेल।

2. दीक्षा, सम्प्रदाय एवं गुरु परम्परा : पूज्य गुरु/गुरुणी जी का नाम, दादा गुरु का नाम, परंपरा, दीक्षा तिथि व स्थान, दीक्षा मंत्र प्रदाता, और धर्म के माता-पिता का विवरण।

3. शैक्षणिक योग्यता एवं शोध कार्य : धार्मिक अध्ययन, लौकिक शिक्षा/योग्यता, पीएच.डी. विवरण (वर्ष और यूनिवर्सिटी), और शोध/खोज का विषय।

4. धार्मिक साधना, साहित्य व चातुर्मास विवरण : लिखित या संपादित साहित्य, पदविहार/विचरण क्षेत्र, धार्मिक उपलब्धियां, तप आराधना का विवरण, और चातुर्मास स्थलों की सूची।

5. प्रेरित संस्थाएं और डिजिटल हैंडल : प्रेरणा से संचालित संस्थाएं (धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक), यूट्यूब, इंस्टाग्राम, फेसबुक, वेबसाइट लिंक, और सेवाधारी का संपर्क।

आप सभी से विनम्र निवेदन है की श्रमण संघीय अमृत महोत्सव के इस दिव्य संकल्प को सफल बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हर क्षेत्र से सही और समय पर जानकारी प्राप्त हो। यह डिजिटल डेटा आने वाले समय में श्रमण संघ के संगठन और प्रचार में एक मील का पत्थर साबित होगा। हम इस ऐतिहासिक डिजिटल अभियान में पूरे उत्साह के साथ सहयोग करें और जैन प्रकाश समाचार पत्र के माध्यम से इस संदेश को जन-जन तक पहुंचाएं।

- राजीव सांखला जैन

ऑनलाइन भरने के लिए स्कैन करें

फार्म डाउनलोड करने के लिए स्कैन करें





HaloVerse Entertainment Pvt. Ltd. Mumbai
Jupiter City Developers India Pvt. Ltd. Mumbai
XL Energy Ltd. Mumbai
नरेश-बबिता, हर्ष-संजना,
सौ.कां. करिश्मा, थिया बोहरा जैन
मुंबई - जोधपुर


नरेश बोहरा जैन
कार्याध्यक्ष : श्री मरुधर केशरी पावनधाम, जैतारण (राजस्थान)
वाईस चेयरमैन - विश्वस्त मंडल, जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
Mo.: 7666540600 E-mail : jainn07@gmail.com

नेत्र ज्योति की दिशा में ऐतिहासिक पहल

अमृत महोत्सव वर्ष में नि:शुल्क नेत्र शिविर व सर्जरी का संकल्प



'परस्परोपग्रहो जीवनाम्' जैन दर्शन के इसी शाश्वत और मानवतावादी सिद्धांत को चरितार्थ करते हुए, श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली द्वारा एक अत्यंत सराहनीय और कल्याणकारी कदम उठाया जा रहा है। श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के 75वें स्थापना दिवस 'अमृत महोत्सव' के पावन अवसर पर समाज के जरूरतमंद और वंचित वर्ग के स्वास्थ्य संरक्षण के लिए नि:शुल्क नेत्र जाँच शिविर एवं 75 नि:शुल्क नेत्र शल्य चिकित्सा (ऑपरेशन) का संकल्प लिया गया है।

दीपावली पर्व के पश्चात विशाल नि:शुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन होना है, जिसमें जरूरतमंद 75 नेत्र रोगियों के नि:शुल्क ऑपरेशन की पूर्ण व्यवस्था की जाएगी। सेवा, समर्पण और जन-कल्याण का संगम, धार्मिक आस्था और सामाजिक उत्तरदायित्व का यह अनूठा संगम केवल एक उत्सव तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति तक रोशनी पहुँचाने का एक ऐतिहासिक प्रयास है। जैन स्थानक, पश्चिम विहार द्वारा संचालित धर्मार्थ चिकित्सा केंद्र में इस महाअभियान का शुभारंभ किया जाएगा। यहाँ अनुभवी नेत्र विशेषज्ञों द्वारा मरीजों की जांच की जाएगी और मोतियाबिंद या अन्य नेत्र विकारों से पीड़ित 75 चिन्हित मरीजों के ऑपरेशन की पूरी जिम्मेदारी संस्था द्वारा उठाई जाएगी।

जैन दर्शन का जीवंत उदाहरण यह पहल सिद्ध करती है कि धार्मिक अनुष्ठान जब सेवा कार्यों से जुड़ जाते हैं, तो वे समाज में वास्तविक परिवर्तन लाते हैं। जैन कॉन्फ्रेंस की यह व्यापक जन-कल्याणकारी पहल न केवल नेत्र ज्योतिहीन जीवन में उजाला भरेगी, बल्कि समाज में भाईचारे, करुणा और परोपकार की भावना को भी सुदृढ़ करेगी। दूसरों के जीवन को सुखी बनाना और उनके कष्टों को दूर करना ही सबसे बड़ी पूजा है। हम इस महाअभियान से जुड़कर पुण्य के भागी बनें।

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष में धार्मिक लहर

सोशल मीडिया सर्वे में 67% लोगों ने जताई धार्मिक कंटेंट देखने की इच्छा:

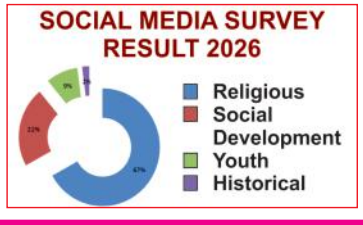
श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष के पावन अवसर पर जहाँ चारों ओर धर्म, अध्यात्म और नैतिक मूल्यों की भक्तिमय लहर बह रही है, वहीं इस पावन माहौल के बीच देश भर के सोशल मीडिया यूजर्स के रुझान को जानने के लिए विशेष ऑनलाइन सर्वे कराये गए। सर्वे का उद्देश्य यह समझना था कि आधुनिकता और डिजिटल क्रांति के इस दौर में लोग सोशल मीडिया पर किस प्रकार की सामग्री और विचारों को प्राथमिकता देना चाहते हैं। सर्वे में समाज के हर वर्ग, विशेषकर युवाओं और श्रावक-श्राविकाओं ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। सामने आए नतीजों ने स्पष्ट कर दिया है कि अमृत महोत्सव वर्ष के इस धर्म प्रभावना के काल में लोगों का मन अपनी जड़ों, धर्म और संस्कृति से गहरा जुड़ाव महसूस कर रहा है।

सोशल मीडिया सर्वे के प्रमुख परिणाम (प्रतिशत में) : **67%** - धार्मिक एवं आध्यात्मिक कंटेंट (**Religious & Spiritual Content**): सर्वे में भाग लेने वाले विशाल बहुमत 67% लोगों ने कहा कि वे सोशल मीडिया पर धार्मिक विचार, संत-महात्माओं के प्रवचन, सत्संग, संस्कृति, स्वाध्याय और अध्यात्म से जुड़ी प्रेरणादायी सामग्री देखना और पढ़ना पसंद करते हैं।

समाज सुधार, मानव सेवा, नशामुक्त समाज, जीवदया और जन-कल्याणकारी सामाजिक अभियानों को 22% सोशल मीडिया यूजर्स ने अपनी प्राथमिकता में रखा। 9% - युवा एवं भविष्य/करियर से जुड़े मुद्दे (Youth & Career Issues) : कुल उत्तरदाताओं में से 9% लोगों ने युवाओं के विकास, शिक्षा, रोजगार, स्किल डेवलपमेंट और चरित्र निर्माण से जुड़े विषयों को अपनी पहली पसंद बताया। 2% - ऐतिहासिक धरोहर व गौरवगाथाएँ (Historical Content), 2% प्रतिभागियों ने इतिहास, प्राच्य परंपराओं, ऐतिहासिक महापुरुषों और गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत से जुड़ी जानकारीप्रद सामग्री में अपनी रुचि दिखाई।

धार्मिक माहौल और डिजिटल क्रांति पर विशेषज्ञों की राय : अमृत महोत्सव वर्ष के अंतर्गत चल रही धर्म की इस अविरल धारा के बीच आए इन आंकड़ों पर विचार व्यक्त करते हुए बुद्धिजिवियों और जानकारों का कहना है कि आज का समाज मानसिक शांति, नैतिक मूल्यों और आत्मिक संतोष की खोज में है। यही वजह है कि डिजिटल दुनिया के शोर-शराबे के बीच भी 67% जैसी बड़ी संख्या धार्मिक और सात्विक कंटेंट से जुड़ना चाहती है।

जैन कॉन्फ्रेंस के सोशल मीडिया विभाग ने बताया कि इस ऑनलाइन सर्वे के सकारात्मक आंकड़ों का उपयोग भविष्य में सोशल मीडिया के जरिए समाज में नैतिक चेतना, संस्कार निर्माण और धर्म-संवर्धन के अभियानों को और अधिक संगठित एवं प्रभावी ढंग से संचालित करने के लिए किया जाएगा।





जैन कॉन्फ्रेंस के आजीवन सदस्यों के लिये विशेष सूचना

Scan Here

जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के समस्त आजीवन सदस्यों को सूचनार्थ निवेदन है कि आप अपना नाम, पता, फोटो, मोबाईल नंबर, ई-मेल व अन्य जानकारी दिए गए QR कोड को स्कैन करके अपडेट कर सकते हैं। - सम्पादकीय टीम



प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा

भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक और नोबल पुरस्कार विजेताओं की

स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये
प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा
बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स
स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप
30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.
Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com



सहनशीलता की परख

क्रोध रूपी अग्नि को शांत करने के लिए क्षमा की जरूरत होती है। वही पुरुष महान कहलाते हैं जो स्वयं पर क्रोध करनेवाले को क्षमा कर देते हैं। 'क्षमा' महानता का मापदण्ड है। इसी मापदण्ड से व्यक्ति की महानता सिद्ध होती है।

सुकरात जितने बड़े दार्शनिक उतने ही विनम्र और सहनशील भी थे। उनकी पत्नी में ठीक इससे विपरीत विशेषताएं थीं। सुकरात की विनम्रता का कोई जवाब नहीं था तो उनकी पत्नी का झगड़ालूपन भी लाजवाब था। बेअक्ल तो वह थी ही। उनका दाम्पत्य-जीवन ऐसा था मानो प्रभु ने दो विरोधी ध्रुवों को मिला दिया हो।

एक बार की बात है। सुकरात अपने एक शिष्य के साथ बाहर से घर लौटे। लौटते ही उनकी पत्नी उन्हें अकारण गालियाँ बकने लगी। सुकरात ने अपने स्वाभाव के अनुकूल प्रत्युत्तर में खामोशी और मुस्कराहट ही दी। अकारण गालियाँ सुनकर वे हँसने रहे। यह देखकर पत्नी का गुस्सा और बढ़ गया। वह और भी जोर-जोर से गालियाँ बकने लगी। सुकरात पर कोई असर न था। वे धैर्य की सीमा बने रहे। हँसते रहे। पत्नी और भी तेजी से अपशब्द बोलती हुई बाहर चली गई। वह नाले से एक बाल्टी कीचड़ भर लाई और वह कीचड़ उसने सुकरात के सिर पर उड़ेल दिया। कीचड़ से सराबोर सुकरात ने इस बार भी प्रतिक्रिया नहीं की।

शिष्य चुपचाप सब कुछ देख रहा था। कीचड़ से लथपथ गुरु को देखकर उससे न रहा गया। कहा - ''क्षमा करें गुरुदेव! यह औरत आपके घर में रहने लायक नहीं है। यह तो साक्षात् चुड़ैल है। इसे तो कड़े से कड़ा दण्ड मिलना चाहिए।'' शिष्य आवेश व क्रोध से कांप रहा था।

''क्यों?'' शिष्य हैरान रह गया।

''क्योंकि इसके ऐसे व्यवहार से ही मुझे खुद को जाँचने का अवसर मिलता है। यह ऐसा व्यवहार न करे तो मैं अपनी सहनशीलता को कैसे जांचूँ.... कैसे परखूँ? इसीलिए यह मुझसे बड़ी है।'' सुकरात ने हँसते हुए समझाया।

सम-भाव मन की अडोल स्थिति है। जैसा जगत् को देखोगे, वैसा ही हो जाएगा। महत्व दृष्टि का है।

सहनशीलता मनुष्य का एक महान गुण है। यह हमें जीवन की कठिन परिस्थितियों में धैर्य और शांति बनाए रखना सिखाती है। सहनशील व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी अपना संतुलन नहीं खोता और सोच-समझकर निर्णय लेता है। सहनशीलता से मन में प्रेम, करुणा और विनम्रता का भाव उत्पन्न होता है। यह हमें दूसरों की गलतियों को समझने और उनके विचारों का सम्मान करने की प्रेरणा देती है। जिस व्यक्ति में सहनशीलता होती है, वह क्रोध और अहंकार से दूर रहता है। सहनशीलता अपनाकर हम अपने जीवन को सुखमय बना सकते हैं तथा समाज में प्रेम, शांति और सद्भाव स्थापित कर सकते हैं।

श्रमण संघ-त्याग का विशाल सागर/सुरभित गुलदस्ता

– गौतमचंद दुग्गड़ जैन, चेन्नई (पीह)



श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ एक विशाल सागर है, जिसमें अनेको साधु भंगवतो की साधना, तपस्या, ज्ञान और करुणा की धाराएँ समाहित हैं, जिस प्रकार विभिन्न दिशाओं से आने वाली नदियाँ सागर की विशालता बढ़ाती हैं, उसी प्रकार पूज्यवरों की अलग-अलग विशेषताएँ श्रमण संघ को समृद्ध बनाती हैं, इसकी गहराई त्याग में, विशालता सद्भाव में और शक्ति एकता में निहित है।

पूज्य संतों एवं साध्वी भगवंतों के त्याग, संयम और समर्पण से सजे इस गुलदस्ते की महक पिछले 75 वर्षों से देश-विदेश में धर्म, संस्कार और मानवता का संदेश पहुँचा रही है, इसके प्रत्येक पुष्प की अपनी सुगंध और अपनी विशेषता है, किसी की कठोर तप-साधना आत्मबल जगाती है, किसी का गहन ज्ञान दिशा दिखाता है, किसी की ओजस्वी वाणी धर्म से जोड़ती है, तो किसी की सरलता, विनम्रता और करुणा जीवन को सँवारती है, इन सभी गुणों के प्रति आदर और कृतज्ञता ही संघ की सुंदरता को बढ़ाती है।

इस गौरवशाली यात्रा के पीछे पूज्यवरों की कठिन साधना और अनगिनत त्याग समाए हैं, साधुचर्या की कठिनाइयाँ सहते हुए, सुविधाओं से दूर रहकर और संयम की मर्यादाओं का पालन करते हुए उन्होंने समाज में धर्म की ज्योति प्रज्वलित रखी है, उनके तपमय जीवन से हमें प्रेरणा मिलती है कि हम भी अपने स्वार्थ सीमित करें, दूसरों की पीड़ा समझें और जीवन में सेवा, क्षमा तथा सहिष्णुता को स्थान दें।

आज अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर इस विरासत को और सुदृढ़ करने का आह्वान है, उत्सव की महत्व तभी बढ़ेगी, जब पूज्यवरों के संदेश हमारे आचरण में दिखाई देंगे। हमारी श्रद्धा का विस्तार श्रमण संघीय सभी साधु-साध्वी भगवंतों तक हो, हमारी वाणी व्यवहार संबंधों को जोड़े और हमारा सहयोग संघ की एकता को मजबूत करे।

किसी एक संत के प्रति विशेष श्रद्धा रखते हुए भी अन्य संतों के गुणों का सम्मान करना उदार हृदय की पहचान है, अच्छे कार्यो का विस्तार, उनकी सेवा करने वालों का उत्साहवर्धन और मतभेद के समय संयमित संवाद-ये छोटे-छोटे प्रयास संघ की बड़ी शक्ति बनते हैं प्रत्येक श्रावक-श्राविका अपने आचरण से संघ के वातावरण की ख्याति में और चार चांद लगा सकते हैं। हम अमृत महोत्सव में संकल्प लें कि अहम् तुलना और परस्पर मतभेद से ऊपर उठेंगे, सुनी-सुनाई बातों से दूर रहेंगे, सभी पूज्यवरों के प्रति विनय रखेंगे और नई पीढ़ी को धर्म के साथ सेवा मैत्री एकता के संस्कार देंगे, उन्हें अधिकाधिक जोड़ेंगे, जहाँ दूरी हो, वहाँ संवाद बढ़ाएँ, जहाँ कठिनाई हो, वहाँ सहयोग दें और जहाँ श्रेष्ठ कार्य हो, वहाँ खुले हृदय से अनुमोदना करें।

75 वर्षों की इस सुगंधित विरासत को अगली पीढ़ी तक पहुँचाना हम सबकी साझा जिम्मेदारी है, पूज्यवरों ने त्याग से जो गुलदस्ता सजाया है, उसे हम सद्भाव से महकाएँ, उन्होंने अनुपम साधना से जिस सागर को विशाल बनाया है, उसकी गरिमा हम एकता और समर्पण से बढ़ाए।

(पृष्ठ 2 का शेष 'भक्ति शक्ति विद्यादायिनी विजयादशमी') दूसरा तत्व था अहंकार। अपने अधीन संपत्ति सत्ता का ऐसा अहंकार उसे हो गया था कि उसने राम को अकिंश्चित्कर मानने की भूल की। व्यक्ति का सामर्थ्यशाली होना निश्चित ही सुखावह है, किन्तु अपने सामर्थ्य के अहं में औरों को तुच्छ मानना यह व्यक्ति और समष्टि दोनों के लिए ही भयावह है। समर्थ व्यक्ति का झूठा अहंकार विनाश का कारण बनता है। राम की अपेक्षा रावण को ही नहीं उसके वंश साम्राज्य के लिए एक त्रासदी बन गया।

विकार और अहंकार पर विजय प्राप्त करने का संदेश लेकर विजयादशमी उपस्थित है। रावण के जीवन को शोकान्तिका इसी बात को द्योतक है कि विकार एवं अहंकार सामर्थ्य के लिए भीषण अभिशाप है। दूसरी तरफ राम की विजय यह दर्शाती है कि सात्विकता, पवित्रता सबसे श्रेष्ठ सामर्थ्य है। राम के पास साधन, सैन्य शस्त्र रावण की तुलना में नगण्य थे किन्तु राम की विनम्रता, धर्मनिष्ठा, वचनबद्धता के कारण उनका पलड़ा भारी बना, राम विजयी हुए। आन्तरिक सामर्थ्य, आत्मिक बल के समक्ष शारीरिक, सामरिक बल टिक नहीं पाता है, इस रूप में विजयादशमी शक्तिवर्धन संरक्षण का संदेश प्रदान कर रही है।

विजयादशमी प्राचीन काल में विद्या सरस्वती पूजन के रूप में गुरुकुलों, आश्रमशालाओं में प्रचलित थी। ज्ञान प्राप्ति के साधनों का पूजन विद्यार्थियों, छात्रों में ज्ञान तथा ज्ञानियों के सम्मान का प्रतीक माना जाता था। भारत वर्ष में पुरातन काल से गंभीर अध्ययन की, ज्ञान के आदान प्रदान की उच्च परम्परा श्रुति तथा श्रुतज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित थी। उच्च कोटि के अध्येता (Scholars) तथा आत्मज्ञाता भारतवर्ष में विद्यमान रहे है, जिनके ग्रन्थ, सिद्धान्त आज भी विभिन्न क्षेत्रों के जिज्ञासुओं को आकर्षित करते हैं। विजयादशमी उस ज्ञानयज्ञ की उच्च परम्परा के सम्मान का भी दिन है।

अध्यात्म क्षेत्र में राम को धर्म के तथा रावण को मिथ्यात्व मोहनीय के रूप में स्थापित करते समग्र रूपक का वर्णन काव्यरूप में किया गया है। कविकुलभूषण पूज्यपाद श्री तिलोक ऋषि जी म.मा. ने 'अध्यात्म पर्व दशहरा स्वाध्याय' काव्य की दस कड़ियो में अत्यंत रसप्रद ढंग से वर्णन किया है।

बाह्य जगत में दशमुख रावण का प्रतीकात्मक दहन करने की अपेक्षा अन्तर्जगत् में दश प्रकार के मिथ्यात्व को नष्ट करने का पुरुषार्थ मानव जीवन को अर्थवत्ता प्रदान कर सकता है। इसकी समग्र प्रक्रिया का कथन इस काव्य में हैं। आध्यात्मिक विजय की शक्ति भक्ति विद्या को आत्मसात् करने की प्रेरणा देने वाली विजयादशमी सभी के लिए विजयपथ पर बढ़ने के लिए सहायक बने।

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय') समाधान परंपरा से समझौता नहीं, परंपरा के पालन के लिए सुरक्षित वातावरण तैयार करना है। गुजरात में पुलिस सुरक्षा के निर्देश एक अच्छी पहल थे। लेकिन ऐसे प्रयासों की वास्तविक सफलता के लिए जैन संघों, विहार सेवा समितियों, पुलिस विभाग और स्थानीय प्रशासन के बीच निरंतर समन्वय आवश्यक है। केवल सरकारी आदेश जारी कर देना पर्याप्त नहीं, उसके क्रियान्वयन, जिम्मेदारी और निगरानी की व्यवस्था भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है।

यही कारण है कि डॉ. मोहनराव भागवत जी की ओर से व्यक्त सहयोग की भावना विशेष महत्त्व रखती है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का व्यापक संगठनात्मक नेटवर्क स्थानीय स्तर पर स्वयंसेवकों की उपलब्धता, संवेदनशील मार्गों की पहचान, प्रशासन से समन्वय और आपातकालीन सहायता जैसी व्यवस्थाओं को प्रभावी बनाने में सहयोग कर सकता है। यह सहयोग सरकारी सुरक्षा व्यवस्था का विकल्प नहीं, बल्कि उसका सशक्त पूरक होना चाहिए।

श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में मैं इस सकारात्मक पहल का स्वागत करता हूँ। अब आवश्यकता है कि इस भावना को ठोस कार्ययोजना में बदला जाए और जैन समाज के सभी संघ मिलकर इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभाएँ।

साधु-साध्वियों को अपनी सुरक्षा और अपने संयम के बीच चयन करने की विवशता नहीं होनी चाहिए। उनकी सुरक्षा केवल जैन समाज का प्रश्न नहीं, बल्कि भारत की प्राचीन आध्यात्मिक विरासत के संरक्षण का दायित्व भी है। आशा है कि यह पहल घोषणाओं तक सीमित न रहकर देशव्यापी सहयोग और परिणामकारी व्यवस्था का रूप लेगी।

परंपरा सुरक्षित रहे, संयम अक्षुण्ण रहे और साधु-साध्वियों का पदविहार निर्भय बने, यही इस पहल की वास्तविक सार्थकता होगी।


R. Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
सदस्य - विश्वस्त मंडल, जैन कॉन्फ्रेंस
Mob.: 9444204046 E mail : rmrjainplr@gmail.com

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM POLUR
JAIN SILKS & READYMADES POLUR
vamalaya EXCLUSIVE DESIGNER WEDDING COLLECTION POLUR SIRUVANAMALAI VILLUPURAM
JAIN PETRO
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR


M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

उपाध्याय प्रवर पूज्य श्री रवीन्द्र मुनि जी म. की 49वीं दीक्षा जयंती हर्षोल्लास के साथ संपन्न





नई दिल्ली : रविवार, 11 अक्टूबर को द फ्लोरेंस बैंक्वेट हॉल, नजफगढ़ रोड दिल्ली में एस.एस. जैन सभा, इंद्रपुरी के तत्वावधान में संघ सेतु उपाध्याय प्रवर पूज्य श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज की संयम साधना एवं आत्मकल्याण की गौरवशाली दीक्षा यात्रा के प्रति कृतज्ञ वंदन एवं भावपूर्ण अभिनंदन हेतु 49वीं दीक्षा जयंती का भव्य आयोजन बड़े हर्षोल्लास एवं श्रद्धाभाव के साथ संपन्न हुआ।

इस पावन अवसर पर वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर पू. डॉ. श्री विशाल मुनि जी महाराज, उपप्रवर्तक श्री पंकज मुनि जी महाराज, प्रज्ञा महर्षि श्री उपेन्द्र मुनि जी महाराज, जनमन वल्लभ पूज्य गुरुदेव श्री अमित मुनि जी महाराज, पूज्य गुरुदेव श्री आदित्य मुनि जी महाराज, प्रवचन प्रभावक श्री सुखदर्शन मुनि जी महाराज, विद्याभिलाषी श्री पुष्पेन्द्र मुनि जी महाराज, महासाध्वी डॉ. श्री शैली जी महाराज तथा महासाध्वी श्री मनीषा जी महाराज की साध्वियों सहित अनेक संत-साध्वीवृंद का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। संतों के मंगलमय सान्निध्य से पूरा वातावरण धर्ममय एवं भक्तिमय हो गया।

इस अवसर पर श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली की ओर से सहभागिता करते हुए राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री जसवंत जैन, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री महावीर प्रसाद जैन 'रिण्ढाना', ज्ञान प्रकाश योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नरेश आनंद प्रकाश जैन, राष्ट्रीय चेयरमैन श्री सुरेश कुमार जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष जैन, दिल्ली प्रान्तीय अध्यक्ष श्री जितेंद्र जैन, महामंत्री श्री ललित ओसवाल जैन, वरिष्ठ मार्गदर्शक श्री राजकुमार जैन, दिल्ली प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती सीमा जैन, दिल्ली प्रांतीय महिला सह-कोषाध्यक्षा श्रीमती कौशल्या जैन आदि ने पूज्य गुरुदेव श्री रवींद्र मुनि जी महाराज को उनकी 49वीं दीक्षा जयंती पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं अर्पित की तथा उनके संयम, साधना एवं धर्म प्रभावना के प्रति श्रद्धा व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मंच सम्राट, जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जैन ने किया।

इस अवसर पर उत्तर भारतीय प्रवर्तक, राष्ट्र संत पूज्य गुरुदेव श्री सुभद्र मुनि जी महाराज की ओर से उपाध्याय प्रवर श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज को 'शासन प्रभावक' की उपाधि से अलंकृत किया गया। यह सम्मान उनके धार्मिक योगदान, संयममय जीवन एवं जिनशासन की प्रभावना के प्रति समर्पण का प्रतीक है।

समारोह में 51 भाग्यशालियों के लक्की ड्रॉ निकाले किये गए। समग्र आयोजन श्रद्धा, भक्ति एवं धर्ममय वातावरण में संपन्न हुआ। एस. एस. जैन सभा इन्द्रपुरी के प्रधान श्री रवीन्द्र जैन, महामंत्री श्री राजेश जैन, कोषाध्यक्ष श्री अमित जैन तथा उनकी सम्पूर्ण कार्यकारिणी ने उक्त आयोजन को सफल बनाने में अपना भरपूर योगदान दिया। प्रेषक : रवीन्द्र जैन

सवाई माधोपुर से 50 श्रावक-श्राविकाओं ने की पंच दिवसीय श्रमण संघीय गुरु भगवंत दर्शन वंदन यात्रा

सवाई माधोपुर (राजस्थान) : जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री महेन्द्र जैन चोरू के संयोजन में सवाई माधोपुर से 50 श्रावक-श्राविकाओं ने बस द्वारा राजस्थान में विराजित श्रमण संघीय पूज्य गुरु भगवंतों के दर्शन वंदन प्रवचन के लिए पांच दिन की यात्रा की, जिसमें कोटा जय श्री विहार में विराजित श्री ध्यानदर्पण मुनि जी कार्यक्रम, पावन धाम में विराजित उप-प्रवर्तक श्री राकेश मुनि जी म., बेगू में श्री मणिप्रभा जी म.।

भीलवाड़ा में युवाचार्य भगवन का जन्मोत्सव प्रवचन, चित्तौड़ में श्री प्रतिभा जी म., डूंगला में श्री धैर्यप्रभा जी म. , खेरोदा में मेवाड़ प्रवर्तक श्री कोमलमुनि जी म., उदयपुर देवेन्द्र धाम में उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी म. प्रवचन, प्रवर्तक श्री राजेन्द्र मुनि जी म., सेक्टर 4 में श्री दिव्यप्रभा जी म., सेक्टर 5 में श्री अपूर्वप्रज्ञा जी म., अशोक नगर में श्री शीतल जी म., दूधिया गणेश में श्री मंजुलज्योति जी म., कड़िया में महामंत्री श्री सौभाग्यमुनि जी कुमुद पुण्य स्थली, घोड़घाटी में गुरु मदन मुनि पथिक विहार धाम, एकलिंग मंदिर, बावन जिनालय सांवलिया पारसनाथ देलवाड़ा, नाथद्वारा में उपाध्याय प्रवर श्री गौतम मुनि जी म. प्रवचन, भीम में श्री जयमाला जी 'जीजी' म., सोजत में मरुधर केसरी अस्थि कलश स्मारक, पाली में प्रवर्तक श्री सुकन मुनि जी म. प्रवचन, जैतारण में मरुधर केसरी पावन धाम, कुचेरा में श्री सन्मति मुनि 'साहिल' म. के दर्शन वंदन प्रवचन का लाभ लिया।

पांच दिन में लगभग 25 स्थानों पर दर्शन वंदन और पांच प्रवचनों का लाभ लिया। सवाई माधोपुर से प्रतिवर्ष लगभग 80 श्रावक-श्राविकाएं महेन्द्र जैन चोरू के संयोजन में प्रतिवर्ष आचार्य भगवन पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज साहब के जन्मोत्सव पर सूरत दर्शन वंदन करने जाते है। प्रेषक : महेन्द्र जैन

पूज्य गुरुदेव श्री सुकन मुनि जी महाराज के दर्शनार्थ पहुँचे जैन कॉन्फ्रेंस एवं सादड़ी श्रीसंघ के पदाधिकारी





पाली (राजस्थान) : पाली के रूई कटला स्थित आचार्य रघुनाथ स्मृति जैन भवन में चातुर्मासार्थ विराजित मरुधरा भूषण, शासन गौरव, संत शिरोमणि श्रमण संघीय प्रवर्तक पूज्य गुरुदेव श्री सुकन मुनि जी महाराज साहब तथा तपस्वी रत्न, ज्योतिष सम्राट उपप्रवर्तक पूज्य श्री अमृत मुनि जी महाराज साहब आदि ठाणा-5 के दर्शनार्थ श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली एवं सादड़ी श्रीसंघ के पदाधिकारीगण पहुँचे। सभी ने गुरुदेव के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया तथा धर्मचर्चा का लाभ लिया।

इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री जसवंत जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री जीवनराज पुनमिया, ज्ञान प्रकाश योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नरेश आनन्द प्रकाश जैन तथा राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जैन उपस्थित रहे। सादड़ी श्रीसंघ के महामंत्री श्री मुकेश पुनमिया जैन सहित श्रीसंघ के अन्य पदाधिकारीगण एवं श्रावकगण ने भी गुरुदेव के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए आशीर्वाद प्राप्त किया। इस आध्यात्मिक भेंट के दौरान मार्च 2027 में आयोजित होने वाले अमृत महामहोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम की तैयारियों एवं व्यवस्थाओं पर चर्चा हुई।

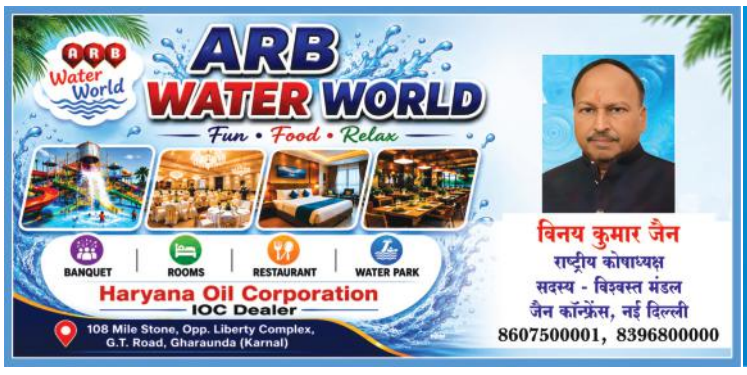
पूज्य गुरुदेव श्री सुकन मुनि जी महाराज साहब ने मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए आयोजन को सुव्यवस्थित एवं सफल बनाने की प्रेरणा दी। साथ ही, जैन कॉन्फ्रेंस को इस महत्त्वपूर्ण धार्मिक आयोजन से जुड़कर सहयोग एवं सहभागिता निभाने की अनुमोदना की।

प्रेषक : विपुल जैन

महासाध्वी श्री प्रवेश कुमारी जी महाराज की 90वीं जन्म जयंती स्मृति समारोह श्रद्धाभाव के साथ संपन्न



साहिबाबाद (उत्तर प्रदेश) : श्री श्वेतांबर स्थानकवासी जैन सभा, साहिबाबाद के तत्वावधान में पंजाब सिंहनी, शास्त्र ज्ञाता महासाध्वी श्री प्रवेश कुमारी जी महाराज की 90वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में स्मृति समारोह नेपाल गौरव महासाध्वी डॉ. पूजाज्योति जी महाराज आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय पर्यवेक्षक श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष श्री जितेंद्र जैन, महामंत्री श्री ललित ओसवाल जैन, कार्यकारी महामंत्री श्री संदीप जैन सोनू, श्री विनय नाहटा जैन, श्री सुशील कुमार जैन-गाजियाबाद, श्री निर्मल भंसाली जैन एवं पूर्वी दिल्ली महासंघ के अध्यक्ष श्री अशोक जैन 'खट्टे वाले' आदि उपस्थित रहे। प्रेषक : ललित ओसवाल जैन





जैन कांफ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री प्रो. डॉ. अमितराय जैन रुहेलखंड विश्वविद्यालय की सलाहकार समिति के सदस्य नामित

दिल्ली : महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली ने विश्वविद्यालय की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ बनाने, वित्तीय अनुशासन को प्रभावी करने तथा उपलब्ध संसाधनों के बेहतर उपयोग और आय के नए स्रोत विकसित करने के उद्देश्य से वित्तीय प्रबंधन सलाहकार समिति का गठन किया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अनिल कुमार राय के आदेश के अनुपालन में 12 अक्टूबर 2026 को जारी अधिसूचना के अनुसार, प्रसिद्ध इतिहासकार एवं शिक्षाविद् प्रो. (डॉ.) अमितराय जैन को इस महत्वपूर्ण समिति का सदस्य नामित किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. राजीव कुमार की अधिसूचना संख्या एम.जे.पी. रु.वि./प्रशा./2026/713, दिनांक 12 अक्टूबर 2026 के अनुसार, समिति तत्काल प्रभाव से कार्य करेगी। सलाहकार समिति में शिक्षा, वित्तीय प्रबंधन, उद्योग, कॉरपोरेट क्षेत्र, प्रशासन और शोध से जुड़े अनेक अनुभवी व्यक्तियों को शामिल किया गया है। इनमें पूर्व कुलपति प्रो. अमेरिका सिंह, डॉ. श्याम अग्रवाल, श्री सहगल शाह, डॉ. अनुजीत पाठक, श्री आदेश त्यागी, डॉ. रामपाल सिंह, डॉ. ओ.पी. शुक्ला, प्रो. संजय गर्ग, प्रो. नरेंद्र सिंह, प्रो. दर्शन सिंह भोपाली, श्री लक्ष्मी प्रसाद जोशी तथा विश्वविद्यालय के वित्त अधिकारी श्री महिमा चंद सहित अन्य विशेषज्ञ शामिल हैं। समिति में प्रो. (डॉ.) अमित राय जैन की नियुक्ति इतिहास, संस्कृति और अकादमिक क्षेत्र से उनके अनुभव को विश्वविद्यालय के व्यापक विकास से जोड़ने की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

स्मृति शेष श्रद्धांजलि



श्री संतोष कुमार संचेती जैन का स्वर्गवास

नागपुर (महाराष्ट्र) : श्री संतोष कुमार संचेती जैन सुपुत्र श्री घेवरचंद संचेती जैन उम्र 68 वर्ष का 10 अक्टूबर को नागपुर निजी अस्पताल में निधन हो गया। प्रेषक : महेश सुरेश संचेती जैन

राष्ट्रसंत, सेवा सम्राट, उप-प्रवर्तक गुरुदेव श्री पंकज मुनि जी म. आदि ठाणा का आगामी चातुर्मास मानसा मण्डी के लिए घोषित



दिल्ली : सैक्टर 5-6 रोहिणी में विराजित राष्ट्रसंत, उप-प्रवर्तक गुरुदेव श्री पंकज मुनि जी म., भारत केसरी, शासन सूर्य, ओजस्वी प्रवचनकार डॉ. वरुण मुनि जी म., कर्मयोगी, मधुर वक्ता श्री रूपेश मुनि जी म. 'रजत' आदि ठाणा-3 का वर्ष 2027 के लिए मंगलमय चातुर्मास हर्षपूर्ण जयनाद एवं उत्साह के वातावरण के बीच मानसा मण्डी (पंजाब) के लिए घोषित किया गया। प्रेषक : रामनिवास जैन

चेन्नई के विहार सेवा ग्रुप को 'सेवा रत्न अवार्ड'



चेन्नई (तमिलनाडु) : संत-साध्वीवृंद के विहार की राहों में समय और श्रम समर्पित करने वाली सेवा को श्रमण संघीय युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषिजी के 60वें जन्मोत्सव पर विशेष पहचान मिली। तमिलनाडु प्रांत के चेन्नई कोडम्बाक्कम - वडपलनी विहार सेवा ग्रुप को भीलवाड़ा के शांतिभवन में आयोजित जन्मोत्सव समारोह में 'श्री आत्म आनंद देवेंद्र शिव महेंद्र सेवा रत्न अवार्ड' प्रदान कर सम्मानित किया गया। प्रेषक : सुनील चपलोत

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय मंत्री जिनेश्वर जैन 'प्रज्ञा समाज रत्न' से विभूषित



इंदौर (मध्य प्रदेश) : राष्ट्रीय महामंगलकारी अनुष्ठान समिति एवं श्री आदेश्वर पार्श्व सेवा ट्रस्ट चित्तौड़गढ़ के संयुक्त तत्वावधान में दिवाकर दरबार, नरसिंह वाटिका, एयरपोर्ट रोड, इन्दौर पर चल रहे संकल्पमय चातुर्मास 2026 के अंतर्गत आयोजित महामंगलकारी अनुष्ठान के पावन अवसर पर समाज की गौरवमयी विभूतियो का सम्मान किया गया।

चातुर्मास समिति के मुख्य समन्वयक श्री जिनेश्वर जैन को 'प्रज्ञा समाज रत्न' की उपाधि से अलंकृत किया गया। मध्य प्रदेश शासन के नगरीय प्रशासन मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय, बी.सी.एम. ग्रुप के उद्योगपति श्री राजेश मेहता, महावीर भवन ट्रस्ट के महामंत्री श्री रमेश भंडारी जैन, चातुर्मास प्रमुख श्री डिपिन जैन एवं मुख्य संयोजक श्री प्रकाश भटेवरा जैन ने उन्हें शॉल एवं अभिनंदन पत्र भेंट किया।

रतलाम में 20वाँ विशाल रक्तदान महाशिविर संपन्न



रतलाम (मध्य प्रदेश) : श्री जैन दिवाकर नवयुवक मंडल एवं गर्वित गोखरू फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में, मानव सेवा समिति व रेडक्रॉस सोसाइटी के सहयोग से 11 अक्टूबर 2026 (रविवार) को एक विशाल रक्तदान महाशिविर महासती पू. प्रफुल्लाश्री जी म. के पावन आशीर्वाचन से सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर महासती प्रफुल्ला श्री जी म.सा. ने फरमाया कि रक्तदान करना मानव सेवा का सबसे अनुकरणीय कार्य है।

यह रक्तदान महाशिविर मालव रत्न ज्योतिषाचार्य उपाध्याय श्री कस्तूरचंदजी म. सा. की पुण्य स्मृति में विगत 20 वर्षों से श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ नीमचौक के सान्निध्य में जैन दिवाकर नवयुवक मंडल द्वारा आयोजित किया जा रहा है। यह शिविर सुबह 10 बजे से दोपहर 3 बजे तक डीपी परिसर, छोटूभाई की बगीची में आयोजित हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में रक्तदाताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर रिकॉर्ड 207 यूनिट रक्तदाताओं ने ब्लड डोनेट किया जिसमें अच्छी संख्या में महिलाओं ने भी रक्तदान कर अनूठा उदाहरण पेश किया।

इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष प्रदीप उपाध्याय, निगम अध्यक्ष मनीषा शर्मा, आरडीए अध्यक्ष मनोहर पोरवाल, युवा मोर्चा प्रदेश महामंत्री विप्लव जैन, जिला महामंत्री जयवंत कोठारी, समाजसेवी गोविन्द काकानी, रेडक्रॉस सोसाइटी अध्यक्ष प्रितेश गादिया आदि सहित पूरी टीम का विशेष सहयोग रहा। प्रेषक : वीरेंद्र कटारिया

मैसूर जेल में कैदियों के कल्याण हेतु प्रवचन सभा का आयोजन



मैसूरु (कर्नाटक) : स्थानकवासी जैन संघ एवं अंतर्राष्ट्रीय जैन दिवाकर विचार मंच के संयुक्त तत्वावधान में केंद्रीय जेल परिसर में कैदियों के कल्याण के लिए राष्ट्र संत पू. श्री कमलमुनि जी म. 'कमलेश' ने प्रवचन किया।

कैदी बंधु और प्रशासनिक अधिकारियों को व्यसन मुक्ति एवं हृदय परिवर्तन पर संयुक्त संबोधन में पू. श्री कमलमुनि जी म. ने कहा कि व्यसन मनुष्य के तन, मन और जीवन को कमजोर करता है, जबकि सद्विचार, संयम और आत्मचिंतन जीवन को नई दिशा प्रदान करते हैं। कोई भी व्यक्ति जन्म से अपराधी नहीं होता, सही मार्गदर्शन, प्रेम, करुणा और सकारात्मक सोच से प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन संभव है। प्रेषक : नीरज जैन



श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U(C)-312/2026-28

Date of Publication : 15-10-2026
Date of Posting : 21/22-10-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ✲ अंक : 31 ✲ पृष्ठ : 8
माह : अक्टूबर ✲ सप्ताह : 15 अक्टूबर से 21 अक्टूबर

मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुग्गड़ जैन-चेन्नई

अमृत महोत्सव : दीप से दीप जलाने का समय



- महावीर रांका जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक-जैन कॉन्फ्रेंस

एक प्रश्न है, जो इस अमृत महोत्सव की बेला में बार-बार मन के द्वार पर दस्तक देता है-क्या किसी परम्परा का गौरव उसके अतीत में होता है, या उस भविष्य में, जिसे गढ़ने का साहस वह अपने अनुयायियों को देती है?

सत्तर-पचहत्तर वर्ष पहले बोया गया कोई बीज आज वृक्ष बन जाए, तो उसकी प्रशंसा केवल बीज बोने वाले की नहीं होती, उस मिट्टी की भी होती है, जिसने उसे सँभाला, उन हाथों की भी, जिन्होंने उसे सींचा और उन पीढ़ियों की भी, जिन्होंने उसकी छाया को बचाए रखा। श्रमण संघ की यह अमृत यात्रा भी संतों के त्याग, साधना और असंख्य समर्पित हृदयों के पुरुषार्थ से पुष्पित-पल्लवित हुई है। लेकिन वृक्ष की छाया में बैठकर केवल उसकी जड़ों की प्रशंसा करना पर्याप्त नहीं। प्रश्न यह है कि हम उसकी जड़ों को कितना सींच रहे हैं और उसकी शाखाओं को आने वाले कल के आकाश तक पहुँचाने के लिए क्या कर रहे हैं?

अमृत महोत्सव हमें यही उत्तरदायित्व सौंपता है। धर्म को केवल परम्परा में नहीं, व्यवहार में जीवित रखना है, एकता को केवल मंचों पर नहीं, मनों में स्थापित करना है और नई पीढ़ी को केवल इतिहास सुनाना नहीं, उसे ऐसा वर्तमान देना है जिसमें वह अपने धर्म और संस्कृति से जुड़ने का गौरव अनुभव करें। याद रखिए, दीपावली पर हजारों दीप जलाना उत्सव है, लेकिन किसी बुझते हुए दीप को फिर से प्रज्वलित कर देना सेवा है। उसी प्रकार महोत्सव मनाना प्रसन्नता है, पर किसी हृदय में धर्म के प्रति श्रद्धा, किसी युवा में संस्कार और किसी समाज में एकता का भाव जागृत कर देना उसकी वास्तविक उपलब्धि है।

इस अमृत महोत्सव में हम केवल बीते वर्षों की गणना न करें, बल्कि अपने योगदान का भी लेखा-जोखा करें। हमारे बाद आने वाली पीढ़ी जब श्रमण संघ का इतिहास पढ़े, तो उसे केवल गौरवशाली अतीत ही नहीं, हमारे पुरुषार्थ से निर्मित एक उज्ज्वल अध्याय भी दिखाई दे। क्योंकि विरासत का सबसे सुंदर सम्मान स्मारक बनाना नहीं, उन मूल्यों को जीवित रखना है जिनके कारण वह विरासत जन्मी थी।

अमृत महोत्सव का संकल्प यही हो, हम उस पीढ़ी में गिने जाएँ, जिसने परम्परा से प्रकाश लिया भी और अपने कर्मों से उसमें नया प्रकाश जोड़ा भी।

श्रमण संघ अमृत महोत्सव वर्ष पर विशेष...

कुछ पद छोड़े गए थे, ताकि एक संघ खड़ा हो सके!



- डिपिन जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक-जैन कॉन्फ्रेंस

सन् 1952 में सादड़ी की धरती पर इतिहास ने एक अद्भुत दृश्य देखा-कुछ संतों ने अपने पदों से बड़ा अपना उद्देश्य माना, अपनी पहचान से बड़ी अपनी परम्परा मानी और व्यक्तिगत आग्रहों से ऊपर उठकर 'एक आचार्य, एक समाचारी' का संकल्प साकार किया। यही श्रमण संघ की आत्मा है।

75 वर्ष बीत गए, लेकिन प्रश्न आज भी वही है-हम संघ के लिए क्या छोड़ सकते हैं? क्योंकि संघ की ऊँचाई हमारे पदों से नहीं, हमारे त्याग से बढ़ती है, एकता हमारे नारों से नहीं, हमारे व्यवहार से जन्म लेती है। अमृत महोत्सव केवल अतीत पर गर्व करने का अवसर नहीं, भविष्य के प्रति उत्तरदायी बनने का आह्वान है। आइए, हम ऐसी पीढ़ी बनाएँ जो धर्म को केवल माने नहीं, जिएय संघ को केवल अपना कहे नहीं, उसके लिए समर्पित भी रहे।

याद रखिए-दीपक की पहचान उसके नाम से नहीं, उसके प्रकाश से होती है। उसी प्रकार श्रमण संघ का गौरव हमारे पदों से नहीं, हमारे संस्कारों और समर्पण से प्रकाशित होगा।

इस अमृत महोत्सव पर संकल्प लें-हमारा अहं छोटा हो, हमारा उद्देश्य बड़ा हो, हमारे मत भिन्न हो सकते हैं, लेकिन जिनशासन के प्रति हमारे मन में श्रद्धा और संघ के प्रति समर्पण अडिग रहे। क्योंकि संघ केवल एक इतिहास नहीं, हमारी विरासत है, केवल एक संगठन नहीं, हमारी जिम्मेदारी है और केवल 75 वर्षों की यात्रा नहीं, आने वाली पीढ़ियों के लिए हमारा संकल्प है।

श्रमण संघ अमृत महोत्सव वर्ष के पावन प्रसंग पर...

विजयादशमी : धर्म, अनुशासन एवं नवचेतना का पर्व

- विनय कुमार जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष-जैन कॉन्फ्रेंस



विजयादशमी का पर्व हमें असत्य पर सत्य, अधर्म पर धर्म तथा अहंकार पर सदाचार की विजय का संदेश देता है। वहीं, श्रमण संघ स्थापना अमृत महोत्सव वर्ष हमें संघ की गौरवशाली परम्परा, आध्यात्मिक एकता, त्याग, तपस्या एवं अनुशासन के आदर्शों को आत्मसात करने की प्रेरणा देता है।

श्रमण संघ की स्थापना केवल एक संगठन का सूत्रपात नहीं, अपितु एकता, समन्वय और आध्यात्मिक चेतना का ऐतिहासिक उद्घोष है। अमृत महोत्सव का यह पावन वर्ष हमें अतीत के गौरव से प्रेरणा लेकर भविष्य के स्वर्णिम निर्माण का आह्वान करता है।

विजयादशमी हमें सिखाती है कि वास्तविक विजय बाह्य शत्रुओं पर नहीं, अपितु अपने भीतर विद्यमान क्रोध, मान, माया और लोभ पर प्राप्त करनी चाहिए। संघ की सुदृढ़ता हमारी एकजुटता में, धर्म की प्रभावना हमारे सदाचरण में और समाज की उन्नति हमारे सेवा-समर्पण में निहित है।

इस मंगलमय अवसर पर हम संकल्पित हों कि अपने त्याग, तप, संयम और अनुशासित जीवन से जिनशासन की ज्योति को जन-जन तक पहुँचाएँगे। इस पावन अवसर पर हम संकल्प लें कि अपने आचरण में विनय, विचारों में पवित्रता और जीवन में संयम को धारण कर जिनशासन की प्रभावना एवं श्रमण संघ की गौरवशाली परम्परा को और अधिक उज्ज्वल बनाएँ। यही विजयादशमी की सार्थकता और अमृत महोत्सव वर्ष के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धा होगी।

75 वर्ष की गाथा, अब युवा शक्ति की बारी

- अंकुर जैन, राष्ट्रीय युवा चेयरमैन-जैन कॉन्फ्रेंस



समय की रेत पर बहुत से नाम लिखे जाते हैं और मिट जाते हैं, मगर इतिहास के स्वर्णिम माथे पर तिलक उन्हीं का लगता है, जो केवल अपने लिए नहीं, बल्कि किसी महान उद्देश्य और समाज के कल्याण के लिए जीते हैं। श्रमण संघ की 75 वर्षों की यह पावन यात्रा ऐसी ही अनवरत तपस्या और साधना की गाथा है-जहाँ महान संतों के त्याग ने राह बनाई, संयम और अनुशासन ने उसे सँवारा, और अटूट एकता ने उस राह को एक विशाल कारवाँ में बदल दिया।

आज इस पावन अमृत महोत्सव की बेला में मन में एक स्वतः ही प्रश्न अंकुरित होता है-जिन पूज्य संतों और मनीषियों ने अपने अनुपम त्याग, तप और दूरदर्शिता से हमें यह अमूल्य विरासत सौंपी है, क्या हम अपने पुरुषार्थ से इसे नई ऊँचाइयों तक ले जा पाएँगे? आखिर विरासत का अर्थ केवल यह नहीं कि हम अपने पूर्वजों की गाथाओं का गान करें और उन पर गर्व महसूस करें, विरासत का सच्चा अर्थ तो यह है कि हम ऐसे कार्य करें जिससे आने वाली पीढ़ी को हम पर गर्व करने का अवसर मिले।

युवा होना केवल ढलती या बढ़ती उम्र का परिचय नहीं है, बल्कि युवा होना तो अपने समय और परिस्थितियों को एक नई सकारात्मक दिशा देने का अटूट साहस है। हमारी आँखों में यदि गगन चूमने के सपने हों, तो उन सपनों में हमारी सनातन संस्कृति के संस्कार भी रचे-बसे होने चाहिए, हमारी आवाज में यदि युवाओं की हुंकार हो, तो उस हुंकार में समाज को एक सूत्र में जोड़ने का पवित्र भाव भी हो, और हमारे कदम प्रगति पथ पर कितने भी आगे बढ़ें, हमारी जड़ें सदा अपनी जैन संस्कृति और मूल्यों से मजबूती से जुड़ी रहनी चाहिए।

इस अमृत महोत्सव को केवल एक भव्य समारोह या उत्सव तक सीमित न रखें, बल्कि इसे एक नए युग की शुरुआत बनाएँ। आज हम सब मिलकर ऐसा दृढ़ संकल्प लें कि श्रमण संघ का गौरव केवल हमारे शब्दों में ही नहीं, बल्कि हमारे आचरण और चरित्र में साक्षात दिखाई दे। हमारी युवा शक्ति केवल अपनी व्यक्तिगत पहचान बनाने तक सीमित न रहे, बल्कि जिनशासन की पताका को संपूर्ण विश्व में फहराने और इसकी पहचान को और अधिक व्यापक बनाने में समर्पित हो। क्योंकि आने वाला इतिहास हमसे यह नहीं पूछेगा कि हमने अमृत महोत्सव कितनी भव्यता और धूमधाम से मनाया, इतिहास तो यह पूछेगा कि इस महोत्सव से प्रेरणा लेकर हमने समाज और संस्कृति के हित में कितना कुछ बदलने का पुरुषार्थ किया।

75 वर्ष की इस अति-गौरवशाली गाथा को शत्-शत् नमन और आने वाले स्वर्णिम कल के नाम एक अटूट संकल्पः विरासत हमें पूर्वजों से मिली है, लेकिन इसका भविष्य हमारे आज के पुरुषार्थ से ही निर्मित होगा।

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन



समाजरत्न दानवीर भामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

NAMO eWaste
Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com



नरेश आनंदप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष - ज्ञान प्रकाश योजना
सदस्य - विश्वस्त मंडल
जैन कॉन्फ्रेंस



रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ✲ सम्पर्क : 90197 31906